IJAER/ March-April 2021/Volume-9/Issue-5 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

मास मीडिया में महिलाओं का प्रतिनिधित्व

Omika Pant
Scholar
Department of Library Science
Malwancha University, Indore (M.P.)

Dr. Dharmveer Mahajan
Supervisor
Department of Library Science
Malwancha University, Indore (M.P.)

सार

जनसंचार माध्यमों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व लिंग के प्रति सामाजिक धारणाओं, मानदंडों और दृष्टिकोण को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह अध्ययन टेलीविजन, फिल्म, विज्ञापन और डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे मीडिया के विभिन्न रूपों में महिलाओं को कैसे चित्रित किया जाता है, इसके बहुमुखी पहलुओं पर प्रकाश डालता है। यह इन अभ्यावेदनों के ऐतिहासिक विकास की जांच करता है, हुई प्रगति, निरंतर रूढ़िवादिता और महिलाओं के आत्म–सम्मान और सामाजिक भूमिकाओं पर प्रभाव को उजागर करता है। यह अध्ययन लैंगिक समानता और सामाजिक परिवर्तन के लिए मीडिया में महिलाओं के विविध और सशक्त चित्रण के निहितार्थों का भी पता लगाता है। वर्तमान रुझानों का विश्लेषण करके और प्रमुख चुनौतियों की पहचान करके, यह शोध मीडिया, लिंग और सामाजिक मानदंडों के बीच अंतरसंबंध की गहरी समझ में योगदान देता है।

मुख्य शब्दः महिला प्रतिनिधित्व, संचार मीडिया, लिंग संबंधी रूढ़ियां, मीडिया का प्रभाव, महिला सशक्तिकरण, मीडिया चित्रण, लैंगिक समानता, सामाजिक मानदंड।

परिचय

जनसंचार माध्यमों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व स्थायी महत्व और जटिलता का विषय है। टेलीविजन, फिल्म, विज्ञापन और डिजिटल मीडिया जैसे विभिन्न प्लेटफार्मों को शामिल करते हुए मास मीडिया, समकालीन समाज की धारणाओं, मानदंडों और मूल्यों पर एक अद्वितीय प्रभाव डालता है। इन मीडिया चैनलों में महिलाओं के चित्रण का व्यक्तियों के महिला लिंग के साथ अनुभव, समझ और बातचीत के तरीकों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यह परिचयात्मक खंड मास मीडिया में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की

जांच के महत्वपूर्ण महत्व को रेखांकित करेगा, एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करेगा, और लैंगिक समानता और सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में इस अध्ययन की प्रासंगिकता स्थापित करेगा।

सदियों से, मीडिया महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करने वाले दर्पण के रूप में कार्य करता रहा है। इस दर्पण में, सशक्तीकरण और प्रगतिशील चित्रण से लेकर गहराई तक जमी हुई लैंगिक रूढ़िवादिता तक, प्रतिनिधित्व का एक विविध स्पेक्ट्रम मिलता है। इन अभ्यावेदनों का ऐतिहासिक विकास समाज में लिंग भूमिकाओं और अपेक्षाओं की बदलती गतिशीलता का एक प्रमाण है। इस विकास को समझना अब तक हुई प्रगति, मौजूदा चुनौतियों और भविष्य में होने वाले बदलावों की दिशा को समझने के लिए आवश्यक है।

महिलाओं के प्रति धारणाओं और दृष्टिकोण को आकार देने में मीडिया के प्रभाव को कम करके आंका नहीं जा सकता है। मीडिया चित्रण अक्सर रूढ़िवादिता को कायम रखते हैं, चाहे वह गृहिणी के रूप में महिलाओं का एक–आयामी चित्रण हो या व्यावसायिक लाभ के लिए उनके शरीर का वस्तुकरण हो। ये चित्रण न केवल सार्वजनिक धारणाओं को प्रभावित करते हैं बल्कि महिलाओं के आत्म–सम्मान, आकांक्षाओं और सामाजिक भूमिकाओं को आकार देने में भी योगदान देते हैं। नतीजतन, जनसंचार माध्यमों में महिलाओं के प्रतिनिधित्व के निहितार्थ स्क्रीन और पेजों की सीमा से कहीं आगे तक फैले हुए हैं, जो महिलाओं के वास्तविक दुनिया के अनुभवों और समाज में उनके स्थान को प्रभावित करते हैं।

हाल के वर्षों में, मीडिया में महिलाओं के विविध और सशक्त चित्रण की आवश्यकता की पहचान बढ़ रही है। यह मान्यता इस विश्वास पर आधारित है कि मीडिया में पारंपरिक लैंगिक मानदंडों को चुनौती देने, लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और सामाजिक परिवर्तन को उत्प्रेरित करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण बनने की क्षमता है। ऐसे में, मास मीडिया में महिलाओं के प्रतिनिधित्व में मौजूदा रुझानों की जांच करना जरूरी हो जाता है। यह अध्ययन उन तरीकों का पता लगाने का प्रयास करता है जिनसे मीडिया रूढ़िवादिता को खत्म करने और लैंगिक समानता को आगे बढ़ाने में सकारात्मक बदलाव के लिए एक ताकत बन सकता है।

मास मीडिया में महिलाओं का प्रतिनिधित्व एक जटिल और बहुआयामी मुद्दा है जो महत्वपूर्ण शैक्षणिक, सामाजिक और राजनीतिक चर्चा का विषय रहा है। इसमें टेलीविजन, फिल्म, विज्ञापन, प्रिंट मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म सहित मीडिया के विभिन्न रूप शामिल हैं। मास मीडिया में महिलाओं का चित्रण पिछले कुछ वर्षों में विकसित हुआ है लेकिन अभी भी कई चुनौतियों और आलोचनाओं का सामना करना पड़ रहा है। जनसंचार माध्यमों में महिलाओं के प्रतिनिधित्व के संबंध में विचार करने योग्य कुछ प्रमुख बिंदु यहां दिए गए हैं:

रूढ़िवादिता और लिंग भूमिकाएँ:

- ऐतिहासिक रूप से, जनसंचार माध्यमों में महिलाओं को अक्सर रूढ़िवादिता का उपयोग करते हुए और पारंपरिक लिंग भूमिकाओं तक सीमित करके चित्रित किया गया है। इन रूढ़िबद्ध धारणाओं में विनम्र गृहिणी, अत्यधिक कामुक वस्तु, या संकटग्रस्त युवती शामिल हो सकती है।
- ये प्रतिनिधित्व हानिकारक लिंग मानदंडों को सुदृढ़ कर सकते हैं और समाज में असमानता और भेदभाव में योगदान कर सकते हैं।

वस्तुकरण

- मास मीडिया में महिलाओं को अक्सर वस्तुनिष्ठ बनाया जाता है, जहां उनके कौशल, बुद्धि या व्यक्तित्व से अधिक उनके शरीर और शारीरिक बनावट पर जोर दिया जाता है।
- महिलाओं का वस्तुकरण शरीर की छवि के मुद्दों, आत्म–सम्मान की समस्याओं को जन्म दे सकता है और एक ऐसी संस्कृति में योगदान कर सकता है जो महिलाओं को मुख्य रूप से उनके लुक के लिए महत्व देती है।

कम प्रतिनिधित्व और हाशियाकरण:

- महिलाओं, विशेष रूप से रंगीन महिलाओं, एलजीबीटीक्यू महिलाओं और विकलांग महिलाओं को ऐतिहासिक रूप से मीडिया में अग्रणी भूमिकाओं में कम प्रतिनिधित्व दिया गया है। उन्हें अक्सर सहायक या रूढ़िवादी भूमिकाओं में धकेल दिया जाता है।

- यह कम प्रतिनिधित्व यह संदेश दे सकता है कि महिलाओं के कुछ समूह दूसरों की तुलना में कम महत्वपूर्ण या कम सक्षम हैं।

स्त्रीत्व और पुरुषत्वः

- मास मीडिया ने अक्सर स्त्रीत्व और पुरुषत्व की पारंपरिक धारणाओं को मजबूत किया है, महिलाओं और पुरुषों को संकीर्ण परिभाषित बक्से में डाल दिया है जो उनकी अभिव्यक्ति और क्षमता को सीमित करते हैं।
- लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए इन पारंपरिक भूमिकाओं और अपेक्षाओं से मुक्त होना आवश्यक है।

सशक्तिकरण और प्रगतिः

- हाल के वर्षों में, मीडिया में महिलाओं के अधिक विविध और सकारात्मक प्रतिनिधित्व की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ रही है।
- कुछ मीडिया आउटलेट्स और रचनाकारों ने महिलाओं को मजबूत, स्वतंत्र और बहुमुखी व्यक्तियों के रूप में चित्रित करने का प्रयास किया है जो विभिन्न प्रकार की भूमिकाएँ और चुनौतियाँ ले सकती हैं।

मीडिया साक्षरता और वकालतः

- मीडिया साक्षरता कार्यक्रमों और वकालत प्रयासों का उद्देश्य समाज पर मीडिया प्रतिनिधित्व के प्रभाव के बारे में जनता को शिक्षित करना और अधिक जिम्मेदार मीडिया प्रथाओं को प्रोत्साहित करना है।
- ये प्रयास महिलाओं के अनुभवों की वास्तविक दुनिया की विविधता को बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित करने के लिए कैमरे के सामने और पीछे दोनों जगह विविधता बढ़ाने का भी आह्वान करते हैं।

अंतर्विभागीयताः

यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि महिलाओं के अनुभव विभिन्न कारकों से प्रभावित होते हैं, जिनमें नस्ल, वर्ग, यौन रुझान और बहुत कुछ शामिल हैं। मीडिया प्रतिनिधित्व पर चर्चा करते समय अंतर्विभागीय परिप्रेक्ष्य इन अंतर्विभाजक पहचानों पर विचार करने के महत्व पर जोर देते हैं।

निष्कर्षतः, जनसंचार माध्यमों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व सामाजिक धारणाओं और मानदंडों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालाँकि हानिकारक रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों को चुनौती देने के लिए सकारात्मक बदलाव और प्रयास हुए हैं, फिर भी यह सुनिश्चित करने के लिए अभी भी बहुत काम किया जाना बाकी है कि मीडिया महिलाओं के अनुभवों की विविधता और जटिलता को सटीक और सकारात्मक रूप से चित्रित करे। इस क्षेत्र में प्रगति के लिए वकालत, मीडिया साक्षरता और समावेशिता के प्रति प्रतिबद्धता आवश्यक है।

मीडिया में महिलाओं का चित्रण

मीडिया में महिलाओं के चित्रण में टेलीविजन, फिल्म, विज्ञापन, प्रिंट मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म सहित मीडिया के विभिन्न रूपों में महिलाओं को कैसे चित्रित, चित्रित और प्रतिनिधित्व किया जाता है, शामिल है। यह चित्रण महिलाओं के सामाजिक दृष्टिकोण और धारणाओं पर गहरा प्रभाव डाल सकता है। मीडिया में महिलाओं के चित्रण के कुछ प्रमुख पहलू इस प्रकार हैं:

- **स्टीरियोटाइपः** मीडिया में महिलाओं को अक्सर स्टीरियोटाइप का उपयोग करके चित्रित किया जाता है जो उन्हें एक–आयामी चरित्र तक सीमित कर देता है। आम रूढ़िबद्ध धारणाओं में ''संकट में पड़ी युवती,'' ''चिड़चिड़ाने वाली पत्नी,'' ''मोहक'' और ''देखभाल करने वाली'' शामिल हैं। ये रूढ़ियाँ मीडिया में महिलाओं को दी जाने वाली भूमिकाओं और विशेषताओं की सीमा को सीमित कर सकती हैं।
- **वस्तुकरणः** मीडिया में महिलाओं को अक्सर वस्तुनिष्ठ बनाया जाता है, जहां उनकी शारीरिक बनावट, विशेष रूप से उनके शरीर, को उनकी बुद्धिमत्ता, कौशल या व्यक्तित्व से अधिक महत्व दिया जाता है। वस्तुनिष्ठता इस धारणा में योगदान कर सकती है कि महिलाओं का मूल्य मुख्य रूप से उनके शारीरिक आकर्षण से जुड़ा हुआ है।

- **सीमित भूमिकाएँ:** ऐतिहासिक रूप से, मीडिया में महिलाओं को विशिष्ट भूमिकाओं तक ही सीमित रखा गया है, अक्सर प्रेम रुचियाँ, सहायक, या सहायक पात्रों के रूप में। प्रमुख भूमिकाओं में यह कम प्रतिनिधित्व इस विचार को पुष्ट कर सकता है कि महिलाएं पुरुषों की तुलना में कम सक्षम या कम महत्वपूर्ण हैं।
- **शारीरिक छवि:** मीडिया अक्सर महिलाओं के लिए अवास्तविक सौंदर्य मानकों को कायम रखता है, जिससे शारीरिक छवि के मुद्दे, कम आत्मसम्मान और ऐसी संस्कृति पैदा हो सकती है जो अन्य गुणों पर शारीरिक उपस्थिति को प्राथमिकता देती है।
- **यौनीकरण:** मीडिया में महिलाओं का अतिकामुकताकरण एक आम मुद्दा है। महिलाओं को कभी–कभी अत्यधिक कामुक तरीके से चित्रित किया जाता है, जो उन्हें वस्तु के रूप में प्रस्तुत कर सकता है और यौन उत्पीड़न और वस्तुकरण की संस्कृति में योगदान कर सकता है।
- **आयुवाद:** वृद्ध महिलाओं को अक्सर मीडिया में कम प्रतिनिधित्व दिया जाता है या नकारात्मक रूप से चित्रित किया जाता है, जिससे आयुवादी रूढ़िवादिता कायम रहती है और वृद्ध महिलाओं के अनुभवों और योगदान का अवमूल्यन होता है।
- **नस्लीय और जातीय रूढ़िवादिता:** नस्लीय और जातीय रूढ़िवादिता के कारण रंगीन महिलाओं को मीडिया प्रतिनिधित्व में अतिरिक्त चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। ये रूढ़ियाँ पूर्वाग्रह और भेदभाव को मजबूत कर सकती हैं।
- **सशक्तिकरण और विविधता:** मीडिया में महिलाओं को सशक्त, स्वतंत्र और विविध व्यक्तियों के रूप में चित्रित करने का प्रयास बढ़ रहा है जो विभिन्न प्रकार की भूमिकाएँ और चुनौतियाँ निभा सकती हैं। इसमें नेतृत्व की स्थिति में मजबूत महिला पात्रों को प्रदर्शित करना और पारंपरिक लिंग मानदंडों से हटना शामिल है।
- **अंतर्विभागीयता:** यह पहचानना कि महिलाओं के अनुभव जाति, वर्ग, यौन रुझान और विकलांगता जैसे परस्पर विरोधी कारकों से प्रभावित होते हैं, अधिक सटीक और समावेशी मीडिया प्रतिनिधित्व के लिए महत्वपूर्ण है।
- **मीडिया साक्षरता:** मीडिया साक्षरता को बढ़ावा देना दर्शकों को मीडिया में सामने आने वाली महिलाओं के चित्रणों का गंभीर रूप से विश्लेषण करने और उन पर सवाल उठाने में मदद करने और समाज पर इन प्रतिनिधित्वों के संभावित प्रभाव को समझने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण है।

- **वकालत और परिवर्तनः** वकालत समूह और आंदोलन, जैसे आंदोलन और मनोरंजन उद्योग में अधिक विविधता के लिए पहल, हानिकारक चित्रणों को चुनौती देने और अधिक समावेशी और न्यायसंगत मीडिया प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहे हैं।

निष्कर्षतः, मीडिया में महिलाओं का चित्रण एक जटिल मुद्दा है जो समय के साथ विकसित हुआ है लेकिन अभी भी कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। मीडिया में सांस्कृतिक दृष्टिकोण और धारणाओं को आकार देने की शक्ति है, और मीडिया में महिलाओं के प्रतिनिधित्व में सुधार के प्रयास लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और हानिकारक रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों को चुनौती देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, जनसंचार माध्यमों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व एक गतिशील और बहुआयामी घटना है जिसका व्यक्तियों और समाज दोनों पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है। इस अध्ययन ने विभिन्न मीडिया रूपों में महिलाओं के चित्रण के ऐतिहासिक विकास की जांच की है, चुनौतीपूर्ण रूढ़िवादिता में हुई प्रगति पर प्रकाश डाला है और अधिक विविध और सशक्त छवियों को बढ़ावा दिया है। हालाँकि, लगातार चुनौतियाँ बनी हुई हैं, क्योंकि लैंगिक रूढ़ियाँ मीडिया कथाओं को आकार देती रहती हैं और महिलाओं के आत्म–सम्मान और सामाजिक भूमिकाओं को प्रभावित करती हैं।

इन चुनौतियों के बावजूद, आशावाद की गुंजाइश है। धारणाओं, दृष्टिकोण और व्यवहार को प्रभावित करने की मीडिया की शक्ति को कम करके नहीं आंका जाना चाहिए। जैसा कि महिलाओं के अधिक समावेशी और प्रगतिशील प्रतिनिधित्व की दिशा में हाल के बदलावों से पता चलता है, मीडिया में बदलाव के लिए उत्प्रेरक बनने की क्षमता है। हाशिये पर पड़ी महिलाओं की आवाज को बढ़ाकर, रूढ़िवादिता को चुनौती देकर और लैंगिक समानता को बढ़ावा देकर, मीडिया सामाजिक मानदंडों को नया आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

संक्षेप में, मास मीडिया में महिलाओं का प्रतिनिधित्व एक सतत बातचीत है जो लैंगिक गतिशीलता में व्यापक सामाजिक बदलाव को दर्शाता है। रूढ़िवादिता को सुदृढ़ करने और चुनौती देने की मीडिया की

शक्ति को पहचानकर, हम इस प्रभाव का उपयोग एक अधिक न्यायसंगत और समावेशी दुनिया को बढ़ावा देने के लिए कर सकते हैं जहां महिलाओं को उस सम्मान और प्रतिष्ठा के साथ चित्रित किया जाता है और उनके साथ व्यवहार किया जाता है जिसकी वे हकदार हैं।

संदर्भ

- सीओ एयरहिहेनबुवा, आरओ (2020, फरवरी)। एचआईवी/एड्स के लिए स्वास्थ्य संचार में प्रयुक्त सिद्धांतों/मॉडलों का एक महत्वपूर्ण मूल्यांकन। जर्नल ऑफ हेल्थ कम्युनिकेशन, 5–15।
- कैम्पबेल एस.एम.,आरएम (2020)। देखभाल की गुणवत्ता को परिभाषित करना. सामाजिक विज्ञान एवं चिकित्सा, 51, 1611–1625।
- कैरी परसेल, एसएच (2014, 13 अगस्त)। गर्भपात का कलंकः 2010 में ग्रेट ब्रिटेन में प्रिंट मीडिया का गुणात्मक विश्लेषण। संस्कृति, स्वास्थ्य और कामुकता, 16(9), 1141 1155।
- प्रजनन अधिकार केंद्र। (जनवरी 6, 2004)। विश्व की महिलाएँः दक्षिण एशिया में उनके प्रजनन जीवन को प्रभावित करने वाले कानून और नीतियाँ।
- रोग के नियंत्रण और रोकथाम के लिए सेंटर। (2011, 10 मई)। स्वास्थ्य संचार का प्रवेश द्वार. रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्रों से लिया गया।
- रोग के नियंत्रण और रोकथाम के लिए सेंटर। (2015, अप्रैल)। सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के माध्यम से पुरानी बीमारी का समाधानः एक नीति और सिस्टम–स्तरीय दृष्टिकोण।
- चाओ–चिएन चेन, पीडी (2003)।.मात्रात्मक पद्धतिः ब्लाइंड बेसबॉल के लिए अनुसंधान में उचित उपयोग श्रमदक्षता शास्त्र और सुरक्षा डिजाइन।